

Success Stories and case studies documented

i. नरवा गरुवा घुरुवा अऊ बाड़ी की संकल्पना पर स्थापित गौठानों में चारागाह विकास कार्यक्रम :

कृषि विज्ञान केंद्र कोरिया दवारा छत्तीसगढ़ शासन की महत्वाकांक्षी सुराजी योजना— नरवा, गरुवा, घुरुवा अऊ बाड़ी_में जिला प्रसाशन के वित्तीय सहयोग से 10 गौठानों में चयनित ५ एकड़ रकबे में वर्ष भर गौठान के पशुओं के लिए हरा चारा उत्पादन हेतु कार्यक्रम का प्रादर्श प्रारूप स्थापित किया जा रहा है वर्तमान में सोनहत्त विकासखंड के ग्राम पुसला, कुशाह, सलगांवकला, घूघरा, मनेन्द्रगढ़ विकासखंड के रोजी व गरुड़डोल, खड्गवा विकासखंड के बरदर व दुग्गी तथा बैकुंठपुर विकासखंड के सोरगा व चिरमी में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर से आयातित बहुवर्षीय नेपियर घांस की उन्नत प्रजाति CO(BN) 5 की तना कटिंग को 1 से 2.5 एकड़ रकबे में लगाया गया है ताकि आने वाले 75–80 दिनों में पहली कटिंग तदुपरांत 45 दिनों में लगातार कटिंग की जावेगी जिससे गौठानों की गायों को पौष्टिक हरा चारा प्राप्त होने लगे साथ ही साथ चारागाह की कुछ बहुवर्षीय नेपियर घांस की पट्टियों को बीज हेतु सुरक्षित रखा जायेगा जिससे आने वाले वर्षों में तना कटिंग से पूरे जिले के अन्य गौठानों को भी नेपियर घांस प्रदाय किया जा सके तथा गैप फिलिंग हेतु चारागाह में उपयोग किया जा सके ताकि 100 प्रतिशत अंकुरण को प्राप्त किया जा सके क्योंकि नेपियर (बी०न०) गांठों का अंकुरण प्रतिशत लगभग 60 तो 70 प्रतिशत होता है चारागाह की शेष भूमि में 1.5 एकड़ में बहु वर्षीय जवार की उन्नत प्रजाति COFS – 29 (सूखा रोधी) जिसे



65 दिनों बाद 5 कटिंग में साल भर काटा जायेगा तथा मक्का की अप्रीकन टाल को 1 एकड़ रकबा में माह जुलाई के प्रथम सप्ताह लगाया गया है। बहु वर्षीय जवार तथा मक्का की प्रजातियों को Regional Fodder Station हैदराबाद से आयातित किया गया है मॉडल चारागाह में 2.5 एकड़ में नेपियर, 1.5 एकड़ में बहु वर्षीय जवार तथा 1 एकड़ में खरीफ में मक्का, रबी में जई व गर्मी में सूडान घांस लगाया जायेगा जिससे हरे चारे उत्पादन से वर्ष भर गोठनो की गायों को आवश्यक मात्रा में प्रति पशु लगभग 4 से 5 किलोग्राम पौष्टिक चारा प्राप्त हो सके ज्ञात हो की नेपियर एवं बहु वर्षीय जवार लगभग 3 से 4 वर्ष तक हरे चारे के लिए उपयोग की जावेगी उक्त घांसां को बार बार लगाने की आवश्यकता नहीं है। गौठानों में स्थापित होने वाले चारा गाह प्रक्षेत्र का अवलोकन एवं भ्रमण माननीय विधायक, सोनहत्त एवं राज्य

मंत्री दर्जा श्री गुलाब कमरो, माननीय विधायक, बैकुंठपुर श्रीमती अम्बिका सिंह देव व माननीय विधायक मनेन्द्रगढ़, डॉ. विनय जायसवाल के साथ-साथ प्रभारी सचिव श्री निरंजन दास भा.प्र.से., जिला कलेक्टर श्री डोमन सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती तुलिका प्रजापति तथा सम्माननीय जनप्रतिनिधियों द्वारा किया गया है व सफलता की कहानी का प्रसारण डी डी किसान चैनल द्वारा किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों तथा जिला प्रसाशन के सहयोग से चारागाह विकास कार्यक्रम को पूर्णतः स्थापित करने हेतु पुरजोर प्रयास किया जा रहा है चारागाह विकास का कार्य मनरेगा के तहत किया जा रहा है। प्रस्तावित ५ एकड़ चरागाह प्रक्षेत्र से प्रति वर्ष मक्के से 9५ से २० टन हरा चारा, जेई से 9२ से 9५ टन हरा चारा, सूडान घांस से 9८ से २० टन हरा चारा, नेपियर से ३७५ से ४०० टन हरा चारा तथा बहुवर्षीय जवार से ४५ से ५० टन हरा चारा गौठान के पशुओं हेतु प्राप्त किया जा सकेगा। चारवाह समिति के माध्यम से के वी के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में प्रतिदिन महिलायों द्वारा हरा चारा कटा जा रहा है तथा प्रति पशु लगभग ५–६ किलोग्राम का पौष्टिक चारा खिलाया जा रहा है। गोठनो में पशुओं का रखने पर गांव के सभी पशु दिनभर गोठनो में रखे जायेंगे ताकि धान के बाद लगने वाली रबी फसलों का चराई से नुकसान न हों साथ ही साथ गौठानों में एकीकृत पशुपालन प्रबंधन का कार्य उचित तौर तरीके से करके पशुओं का हस्तपुष्ट भी किया जा सकेगा।



ii. टपक सिंचाई पद्धति से वर्षभर सब्जी उत्पादन : कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया द्वारा चार आदिवासी कृषक समूह को टपक सिंचाई पद्धति से वर्षभर सब्जी उत्पादन हेतु मार्गदर्शन दिया जा रहा है। चयनित कृषक समूह का कुल रकबा 6 हेक्टेयर है जिसमें विभिन्न मौसमी सब्जियों का उत्पादन मेढ नाली पद्धति एवं टपक सिंचाई द्वारा लिया जा रहा है। पहले वे

परम्परागत रूप से वर्षा आधारित धान की ही खेती करते थे और बाड़ी में पारम्परिक रूप से सब्जी उत्पादन कर रहे थे, जिससे इनकों खेती से जो लाभ मिलना था वो नहीं मिल पाता था। आज कृषक वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर बेहद खुश हैं और अधिक से अधिक लाभ ले रहे हैं। वर्तमान में कृषक समूह मातृवाटिका के मध्य में अंतरवर्तीय फसल के रूप में टमाटर, मिर्च, भाटा, गोभी, मटर, प्याज, लौकी, शिमला मिर्च की खेती टपक सिंचाई पद्धति से कर रहे हैं। टपक सिंचाई से कृषक 40-45 % तक पानी की बचत कर रहे हैं एवं फर्टिगेशन के माध्यम से उर्वरक का बेहतर प्रबंधन कर रहे हैं। पौधों में सिफारिश की गई खाद की मात्रा फर्टिगेशन के माध्यम से विभिन्न घुलनशील खाद जैसे 19:19:19, 12:32:16, 0:0:50 एवं 0:52:34 के माध्यम से दी गई। किसानों ने फर्टिगेशन के माध्यम से 25-50 प्रतिशत खाद की बचत की। विगत वर्ष कृषक समूह ने मटर, भाटा, मिर्च, टमाटर, गोभी, आलू, प्याज से क्रमशः 7.3, 30, 2.97, 25, 320, 31.20, 25.5 टन/हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त किया एवं रु. 73723/-, 70000/-, 105798.84/-, 42000/-, 108500/-, 141919/-, 116735/- क्रमशः आमदनी अर्जित की। कृषक समूह के बाड़ी में स्थापित फलदार मातृवाटिका एवं सब्जियों की अंतरवर्तीय खेती के प्रादर्श प्रारूप का भ्रमण एवं अवलोकन जिला कोरिया के कलेक्टर, जिला प्रशासन के अधिकारी, कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारी एवं मैदानी अम्ला द्वारा किया गया है व कृषको की सफलता की कहानी का प्रसारण डी डी किसान चौनल द्वारा किया गया। कृषक समूह को कृषक समृद्धि अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।



iii. मसाला फसलों का बीज उत्पादन कार्यक्रम से कृषको का आर्थिक विकास : कोरिया जिले के ग्राम दुधनिया



Drone Image of Turmeric Seed Production in Tribal Farmers Fields

व नगर के तीन आदिवासी कृषक समूह कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के मार्गदर्शन में 4 हेक्टेयर क्षेत्रफल में अदरक एवं हल्दी का बीज उत्पादन कर रहे हैं। पहले वे परम्परागत रूप से वर्षा पर आधारित धान की खेती करते थे। कृषक समूह के प्रक्षेत्र में मातृवाटिका के मध्य अंतरवर्तीय फसल के रूप में अदरक, हल्दी एवं सौंफ का बीज उत्पादन किया जा रहा है। अदरक, हल्दी को रोपण से पहले बाविस्टिन नाम की दवा से 2-3 ग्राम/ लीटर पानी में 15-20 मिनट तक डुबोकर किया गया। मसाला फसलों का रोपण मेड़ नाली पद्धति में किया गया है एवं सिंचाई हेतु टपक सिंचाई पद्धति स्थापित की गई है।

अदरक की उन्नत किस्म सुप्रभा, हल्दी की रोमा एवं सौंफ की अजमेर सौंफ-2 का बीज उत्पादन किया जा रहा है। हल्दी एवं अदरक का रोपण 60x 30 से.मी. की दूरी में एवं सौंफ का रोपण 50x 30 से. मी. की दूरी में किया गया। टपक सिंचाई से कृषक 40-45 % पानी की बचत कर रहे हैं एवं अच्छा उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं। पौधों में सिफारिश की गई खाद की मात्रा फर्टिगेशन के माध्यम से विभिन्न घुलनशील खाद जैसे 19:19:19, 12:32:16 एवं 0:52:34 के माध्यम से दी गई। किसानों ने फर्टिगेशन के माध्यम से 25-50 प्रतिशत खाद की बचत की। पौधों को कीट एवं रोग से बचने हेतु समय समय पर कीटनाशक एवं फफूंदनाशक का उपयोग किया गया। प्रकन्द खुदाई से तीन सप्ताह पहले सिंचाई रोक दी गई ताकि प्रकन्द की गुणवत्ता अच्छी हो। विगत वर्ष कृषक समूह



हल्दी से 10.17 टन प्रति हेक्टेयर, अदरक से 12.15 टन प्रति हेक्टेयर, सौफ से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज उत्पादन किया गया एवं हल्दी से 331117/-अदरक से 339325/-एवं सौफ से 28000/- शुद्ध मुनाफा प्राप्त किया। **बीज उत्पादन कार्यक्रम का आयोजन CSSMIDH के माध्यम से प्राप्त बजट से हुआ। कृषकों की सफलता की कहानी का प्रसारण डी डी किसान चैनल द्वारा किया गया।**

iv. बकरी पालन से आय वृद्धि : वर्ष 2017-18 में महिला कृषक समूह (प्रेरणा स्वयं सहायता समूह) बना कर कृषि विज्ञान केन्द्र-कोरिया द्वारा उन्नत बकरी पालन इकाई की स्थापना की गयी है ताकि सुबह एवं सायं काल में 1-2 घण्टे बकरी पालन इकाई में कार्य कर समूह बिना अपने कृषि/पारिवारिक कार्यों को प्रभावित किये बिना अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकें। उन्नत बकरी पालन के लिए आवास व्यवस्था में बकरियों को साफ सुथरा आहार मुहैया करने हेतु आहार ट्रे में दो समय सुबह एवं शाम प्रत्येक बकरी को संतुलित 200 से 250 ग्राम भूसा, खली, चुनी, दलिया इत्यादि मिश्रित कर महिला कृषकों द्वारा दिया जाता है। दोपहर में आस पास के इलाकों में चराई हेतु बकरियों को चराया जाता है। बकरियों को आवास गृह से दो वक्त सुबह एवं शाम के वक्त बाड़े में 1-2 घंटे के लिए छोड़ा जाता है ताकि आवास गृह में त्यागा हुआ मल-मूत्र पानी द्वारा बहा कर आवास गृह के पीछे बने कम्पोस्ट टैंकों में एकत्रित कर सड़ाकर वर्ष भर पोषक तत्वों से भरपूर खाद तैयार की जा रही है। औसतन प्रत्येक टांके से 1 ट्राली खाद 2-3 महीने में प्राप्त की जा रही है साथ ही साथ बकरियों का खुले में चलने

फिरने से उनकी शारीरिक स्फूर्ति बनी रहती है। बकरियों को आहार ट्रे में खाना देने से बकरियों के मल मूत्र से भोजन दूषित नहीं होता है तथा लम्बे समय तक खाने योग्य बना रहता है एवं अनावश्यक व्यर्थ नहीं होता है साथ ही साथ स्वचालित जल यंत्र से बकरियों को आवश्यकतानुसार जल का उपयोग किया जाता है जिससे साफ पानी बकरियों द्वारा पिया जाता है ताकि जल बचत हो सके। बकरियों में समय अनुसार टीकाकरण किया जा रहा है, जिससे बकरियों में बाढ़ परजीवी के कारण होने वाले रोगों से सुरक्षा मिलती है तथा आवास गृह में स्थापित आहार ट्रे एवं स्वचालित यंत्र से आहार एवं पानी साफ सुथरा रहता है। पानी एवं भोजन की उचित मात्रा का ही दोहन बकरियों द्वारा किया जा रहा जिससे समय, पानी एवं श्रम की बचत होने के कारण कृषक महिला खेती में अधिक ध्यान दे



रहे हैं। उन्नत बकरी पालन इकाई की स्थापना में आवास व्यवस्था, संतुलित आहार के लिए आहार ट्रे, स्वचालित जलयंत्र, कम्पोस्ट टैंक, बाड़ा एवं पानी की टंकी, बकरियों, आहार व पोषण, मेमना आवास एवं अन्य आकस्मिक व्यय की लागत सम्मिलित है। वयस्क बकरियों को 200-250 ग्राम दाना, 4-6 किलो गेहूँ भूसा व 4-6 किलो हरा चारा प्रतिदिन दिया जाता है। बच्चों को दाना 50 ग्राम, 75 ग्राम व 150 ग्राम दाना उनके उम्र के अनुसार दिया जाता है। विगत वर्ष शुद्ध आय 0.80 से 0.90 लाख है। उन्नत बकरी पालन में सिरोही नस्ल की बकरियों को पाला जा रहा है। कृषकों को पारम्परिक बकरी पालन से उन्नत बकरी पालन में बकरियों में अधिक बढ़वार व ओज, कम मृत्यु दर, रोगों का प्रकोप कम एवं संतुलित आहार की कीमत में कमी इत्यादि कारणों से बकरी पालन व्यवसाय करने हेतु जागरूकता आयी है, साथ ही साथ

उन्नत बकरी पालन से सालाना प्रथम वर्ष के उपरांत से ही 1.0-1.50 लाख आमदनी प्राप्त होगी जो कि आने वाले 2-3 साल में 2-3 लाख प्रति स्थापित उन्नत बकरी प्रजनक इकाई से अनुमानित है तथा शुद्ध सिरोही नस्ल के मेमनों को प्रजनन से प्राप्त कर आस पास के कृषकों को बकरियों उचित मूल्य पर प्राप्त हो सकेगी। **श्रीमती मंजूलता (प्रेरणा स्व सहायता समूह) को उन्नत बकरी पालन हेतु कृषक समृद्धि अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है तथा इस खबर को डी.डी. किसान दूरदर्शन के माध्यम से भी प्रसारित किया गया था।**

v. उन्नत गाय पालन से आदिवासी कृषकों के आय में वृद्धि

: आदिवासी कृषकों का समूह बना कर कृषि विज्ञान केंद्र - कोरिया द्वारा उन्नत गाय पालन इकाई की स्थापना की गयी है। आदिवासी कृषक समूह में पांच - पांच कृषकों को सम्मिलित किया गया है। सर्वप्रथम कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को उन्नत गाय पालन के लिए केंद्र में स्थापित गिर एवं साहिवाल गाय पालन इकाई का भ्रमण कराकर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में गाय



प्रजनन, आहार, चारा प्रबंधन, रोग के लक्षण एवं रोकथाम, गोवत्स का पालन पोषण, गोबर एवं गौ मूत्र का संग्रह कर खाद उत्पादन के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी है। जिसमें उन्नत गाय पालन इकाई की स्थापना हेतु आवास व्यवस्था, 5 नग प्रौढ़ गिर/साहिवाल गाय व बैल, स्वचालित जलयन्त्र, रबर मेट, स्वचायर, कम्पोस्ट टैंक एवं ग्रास पैरा कटर की सुविधा से प्रारंभ की गयी है, ताकि सुबह एवं सायं काल में 1-2 घंटे गाय पालन इकाई में कार्य कर कृषक समूह बिना



अपने कृषि/पारिवारिक कार्यों को प्रभावित किये बिना अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकें। उन्नत गाय पालन इकाई में गायों की आवास व्यवस्था के अंतर्गत सुनिश्चित दूरी 4 फीट के अंतराल पर स्वचायर लगाया गया है ताकि गायों में आपस में टकराव न होकर किसी भी प्रकार की उन्हें कोई शारीरिक क्षति न हो। गायों को आराम दायक बैठने की व्यवस्था हेतु रबर मेट फर्श पर बिछायी गई है, जिससे गायों के बैठने पर उनके घुटने एवं थन में किसी भी प्रकार की कोई रगड़ न लगे और थन में कोई भी घाव होकर संक्रमण न हो। गायों को साफ पानी देने के लिए स्वचालित पानी यन्त्र लगाये गए हैं, जिससे आवश्यकता अनुसार पशु प्यास लगने पर पानी पी सके साथ ही साथ पानी की बचत हो। गौशाला में हरा चारा, सुखा चारा, सान्द्र आहार एवं अन्य पोषक तत्व देने के लिए पोषण ट्रे 2.5 फीट लम्बी एवं 1 फीट गहरी बनायीं गयी है

व मुख से मुख पद्धति में गायों को आहार देने से आहार गोबर एवं मूत्र से खराब नहीं होता है। कच्चे गोबर को सुबह, दोपहर एवं शाम को इकट्ठा कर पक्के बने टांकों में उपजाऊ गोबर खाद बनाने के लिए उपयोग किया जाता है चूँकि उन्नत देशी गाय का दूध ए2 मिल्क की श्रेणी में आता है जिसका बाजार में मूल्य रुपये 50-60 प्रति लीटर होता है। पिछले वर्ष दूध, खाद व संतति के विक्रय से 2.4-2.8 लाख की आय हुई। समूह का शुद्ध आमदनी विगत वर्ष 1-1.3 लाख हुई है।

vi. आयस्टर मशरूम से महिलाओं की आर्थिक उन्नति : घर में ही ऑयस्टर प्रजाति की खेती कर श्रीमती तारावती सिंह सालाना 40-50 हजार रुपये कृषि मजदूरी के अतिरिक्त कमा रहे हैं, श्रीमती तारावती सिंह पति श्री सुग्रीव सिंह ग्राम केमाडांड ग्राम पंचायत अमरपुर, बैकुण्ठपुर जिला कोरिया (छ.ग.) की निवासी एक जागरूक महिला आदिवासी किसान हैं। अपनी कड़ी मेहनत और लगन से एक



सफल उद्यमी बन गई हैं। उन्होंने वर्ष 2017-18 में कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया से प्रशिक्षण लेकर अपने घर के



खाली कमरा में 2 कि.ग्रा. मशरूम स्पॉन (बीज) से 18 थैलिया मशरूम प्रारम्भ की शुरु में तो मुनाफा ज्यादा नहीं हुआ लेकिन उपज काफी अच्छा हुआ मशरूम की औषधीय महत्व को समझते हुए आस-पास के पड़ोस वाले को मुफ्त में खिलाये। अब वह 1500 बैग में मशरूम की खेती कर रही है। जिससे प्रति माह शुद्ध 10000-15000 रुपये कृषि के

अतिरिक्त कमा रही है। वर्ष भर में 70-80 हजार रुपये कमाई कर लेती है। इस तरह तारावती वर्ष में 4 बार मशरूम की खेती करती है। एक फसल चक्र 2 माह की होती है। जिसमें प्रति बैग 40 से 45 रुपये खर्च हाती है। प्रति बैग 750 से 800 ग्राम उपज प्राप्त होती है। तैयार मशरूम को लोकल बाजार, कालरी क्षेत्र, चरचा, होटल एवं कृषि विज्ञान केन्द्र को 100 रुपये की दर से बेचते हैं। इस तरह तारावती कृषि, मजदूरी के अतिरिक्त मशरूम उत्पादन कर घर की खर्च चला रही है। साथ ही साथ अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ा रही है। इस तरह अपने भरण-पोषण कर जीवनयापन कर रही है। साथ ही साथ अपने गाँवों में महिला स्व सहायता समूह बनाकर उनको मुफ्त में प्रशिक्षण दे रही है। इस तरह ग्रामीण महिलाओं के लिए मशरूम उत्पादन आजीविका के रूप में वरदान साबित हो रहा है। इस सफलता के लिए श्रीमती तारावती सिंह को वर्ष 2018-19 में माननीय कृषि मंत्री छ.ग. शासन द्वारा कृषक समृद्धि अवार्ड से सम्मानित किया गया।

vii. मशरूम की खेती : मशरूम की खेती से आर्थिक स्थिति में आया सुधार मशरूम की खेती बना महिला स्व सहायता समूहों के लिए रोजगार की साधन। जय कली महिला स्व सहायता समूह ग्राम उजियारपुर विकास खण्ड मनेन्द्रगढ़ जिला कोरिया। स्व सहायता समूह के महिलाओं ने मशरूम की खेती करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से प्रधानमंत्री ग्रामीण कौशल विकास योजना के तहत 200 घण्टे के प्रशिक्षण लेने के बाद रिक्त कमरों में आयस्टर प्रजाति मशरूम की खेती करना प्रारम्भ की। शुरुआत में 100 बैग मशरूम से लगभग 70 कि.ग्रा. उत्पादन लिया जिसको लोकल बाजार, होटलों एवं

दुकानों में बेचा। शुरु में आमदनी कम हुआ उसके बाद समूहों के सभी सदस्यों ने बड़े पैमाने पर मशरूम की खेती शुरु की जिसमें खाली तीन कमरों एवं कम लागत से झोपड़ी बनाकर 3500 बैग मशरूम की लगाये। ऑयस्टर मशरूम की साथ-साथ



मौसम के आधार पर पैरा मशरूम एवं बटन मशरूम की खेती कर सालाना 2 से 2.50 लाख शुद्ध आय कृषि मजदूरी के अतिरिक्त कमा रहे है। वर्ष में ऑयस्टर प्रजाति के 3 फसल प्रति चक्र 3500 बैग से 2800 कि.ग्रा. मशरूम उत्पादन करते है जिसकी शुद्ध लाभ तीनों चक्र में 1 लाख से 1.5 लाख रु. की आय होती है। एक चक्र पैरा मशरूम से शुद्ध आय 60000-70000 होती है। इसी तरह एक चक्र बटन मशरूम से शुद्ध आय 50000-60000 रु. तक होती है। मशरूम की खेती में लागत के 2 से 3 गुना लाभ प्राप्त होती है। इसकी फसल चक्र



अवधि भी कम समय की होती है। जय काली महिला स्व सहायता समूह की अध्यक्ष श्रीमती अनिता सिंह ने बताया कि मशरूम की खेती से सालाना 2 से 2.5 लाख रु. की लाभ हो रही है। इसका मुख्य कारण वर्षभर में मशरूम स्पॉन की उपलब्धता, बाजारों की उपलब्धत, प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन से ये सम्भव हो पाया है। हम सभी समूह के सदस्यों द्वारा मशरूम की खेती करते है और कृषि विज्ञान केन्द्र, को 100 रु. के दर से बेच देते है और बचे हुए मशरूमों से विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार करके (जैसे-बड़ी, पापड़, अचार) आदि। बाजारों में बेचते है। कृषि विज्ञान केन्द्र हमारे मशरूम खरीद कर सुखा मशरूम एवं मशरूम पावडर बनाकर अधिक लाभ दिलाते है। मशरूम की खेती से आज हमारे आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है

Case Study: i. Zero Seed Drilling: A better utilization of residual moisture and possibility to increase pulse crop area in Rainfed Rice Production System : Korea district faces severe drought in the year 2015-16 received only 48% rainfall in monsoon season. Due to the water scarcity it was difficult to take rabi crops in assured irrigation. Looking to the above fact KVK-Korea scientists interact with tribal and associated farmers for adopting zero seed drilling of field pea in low land rice fields for better utilization of residual moisture for germination and vegetative growth. After convincing farmers zero seed drilling of field pea var. paras in 30 acres area consisting 17 farmers. Sowing was done in mid November along with improved packages of practices i.e. Bio Fertilizer Application: *Rhizobium* & *PSB* @ 5 gm per kg seed, Bio-agent application: *Trichoderma* @ 10 gm per kg seed. Winter shower uplift the flowering and pod filling growth and farmers got remarkable average yield 6.95 q/ha in comparison to farmers practice 5.31 q/ha (District Average Yield: 5.50 q/ha). The percent increase in yield was observed 29.01 while benefit cost ratio in zero seed drill technology was 3.25 while in farmer's practices having field preparation and two irrigation was 3.08. The farmers of selected cluster quit happy with zero seed drilling and minimum critical input cost and net income per ha. Dr. A.K. Shivhare, Director, Department of Agriculture and Farmer Welfare, Government of India along with IGKV, Scientists visited and interacted with farmers regarding performance of crop and yield attributes observed by farmers.

II. Chickpea cultivation - A Profitable Pulse :

Traditionally pulses considered important elements of cropping systems in Korea district. They were popular because of their importance as a source of protein and ability to fix atmospheric nitrogen (N) and thus improve soil fertility. Karilduwa village is comes under Baikunthpur block of Korea District which is situated 6 km away from district headquarter. The farmers of



Karilduwa village use to do cultivation of local seed for many years and they have lack of technical knowledge about diseases complex of chickpea. Became productivity has decreasing since last couple of years. A farmer Mr. Dadan Singh s/o lives in Karilduwa Village of Baikunthpur Block, he understood the Chickpea cultivation regarding profitability as well as soil fertility of soil .he came in contact with KVK, Korea and got the technical information about use of improved varieties, Seed treatment, sowing by seed cum fertilizer drill, timely use of balance fertilizer dose, weed management and understood the crop protection technique from the scientists of KVK. With the help of advance technical knowledge about Chickpea cultivation, the farmer has huge production with less cost of cultivation. Earlier farmers use to get 4-5 qt. production per hectare, but this year Mr. Dadan Singh has got 8.5 qt. production per hectare. He has got total of Rs. 8500 net profit/ha, it helps to increase economy status of farmer Mr. Dadan Singh. The farmers of nearby villages have seen the scientific way of Chickpea cultivation and got motivation for its production, now they have accepted that scientific cultivation is more profitable and they will do the in upcoming years.

iii. Linseed Production in 3 ha low land Rice field : Name and Address of farmer :- Birendra Nath/Yadunath, Village- Ngar, Baikunthpur Distt- Korea, C.G.), **Category – ST,**



Crop and variety:- Linseed- Kartika , JNC-9, **Promising technology:-** Improved Variety, Seed Treatment, Weed management, timely sowing, Line Sowing , Bio-agent Application, **Details of technology demonstrated:-** Line sowing with seed cum fertilizer Zero till drill, Bio Fertilizer Application: *Azotobacter* & *PSB* @ 5 gm per kg seed, Bio-agent Application: *Pseudomonas* @ 10 gm/kg seed, Pre emergent herbicide

Application: Pendimethalin 30 EC @ 1000 ml per acre, Date of sowing - 25 October 2015, **Performance of technology vis-à-vis local check** (increase in productivity and returns) :- Weed infestation & insect/pest attack is very less, Good germination, High yield as compared to farmer practices. Proper utilization of seed and fertilizer, **Farmer's feedback:** - Earlier farmers use to get 2-3 q/ha but this year Birendra Nath has got 6.1 q/ha it helps to increase economy status of farmer. The farmer got motivation for its production. Now they have accepted that scientific cultivation is more profitable and they will do the in upcoming years.

iv. Mustard Production in 2 ha upland Rice field:

Name and address of farmer: Shri Balram Prasad Manjhi / Rasbihari, Village-Khada, Baikunthpur Distt- Korea (C.G.), **Category –ST, Crop and variety:** - Bharat Sarson-2, **Promising technology:** - Improved Variety, Seed Treatment, Weed management, timely sowing, Line Sowing , Bio-agent Application, **Details of technology demonstrated:-** Line sowing with



seed cum fertilizer drill, Bio Fertilizer Application: *Azospirillum* & *PSB* @ 5 gm per kg seed, Bio-agent Application: *Pseudomonas* @ 10 gm per kg seed, Pre emergent herbicide application: Pendimethalin 30 EC @ 750 ml per acre, Date of sowing - 20 October 2015, **Performance of technology vis-à-vis local check** (increase in productivity and returns) :- Weed infestation & insect/pest attack is very less, Good germination, High yield as compared to farmer practices., Proper utilization of seed and fertilizer, **Farmer's feedback:** - Earlier farmers use to get 3-3.5 q/ha but this year Shri Balram Prasad Manjhi has got 5.8 q/ha it helps to increase economy status of farmer. The farmer got motivation for its production. Now they have accepted that scientific cultivation is more profitable and they will do the in upcoming years.

v. Chili Cultivation under Ridge & Furrow & Drip Irrigation System:

No. of Farmers:12, Area:3.40 ha, Technological Interventions- Variety: HPH-117 & CM Hot, Seed Treatment with *Trichoderma viride*, NPK: 125:75:60, Leaf Curl Virus: Seedling Treatment & Foliar Spray of Imidacloprid at 15 Days Interval @ 50 ml/acre, Ridge & Furrow: Ridge to Ridge Distance: 60 cm, Plant to Plant Distance: 45 cm.

Yield (q ha ⁻¹)	Cost of Cultivation Rs./ha	Gross Income Rs./ha	Net Income Rs/ha	B:C Ratio
182.47	68590.00	275320	206640.00	1:4.01



सफलता | वैज्ञानिक तकनीक से सप्ताह में 400 किलो हो रहा उत्पादन

शिमला मिर्च से मिल रही आर्थिक सुदृढ़ता

हरिभूमि न्यूज, नगर

विकासखण्ड बैकुंठपुर के गांव पंचायत उमझर के कृषक रामेश्वर द्वारा दो एकड़ जमीन में जिले में पहली बार वैज्ञानिक तकनीक से शिमला मिर्च की खेती का प्रयोग किया और इसकी सफलता को, जिससे किसान पूरी तरह सफल रहा। नतीजा यह रहा कि, आज उसके द्वारा आस पास के बाजारों में सप्ताह में 400 किलो शिमला मिर्च बेची जा रही है। इससे एक तरफ इन किसानों का जीवन स्तर तो सुधरा ही, साथ ही इस नई फसल की जानकारी लेकर और भी किसान वैज्ञानिक तकनीक से शिमला मिर्च की खेती करने की जानकारी ले रहे हैं।

इस बारे में कृषक अरविन्द, मंगलीबाई, पप्पू, फिरोज, देवकुंवर ने बताया कि, इन्हें इस फसल के विषय में पहले कुछ जानकारी नहीं थी, लेकिन कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन व सहयोग से इस खेती की शुरुआत की। बहुत



लगे शिमला मिर्च।

कम दिनों में ही अच्छा परिणाम सामने आया और अब हम बढ़िया लाभ कमा रहे हैं। साथ में



बिछोटी के लिए रखे शिमला मिर्च

बहुत से किसान इस खेती को अपनाने के लिए आगे आ रहे हैं।

वैज्ञानिक तकनीक का करते हैं उपयोग

कृषकों ने बताया कि, पीछे छोटे होने के कारण ज्यादा जगह भी नहीं पेरते। कम जमीन में अधिक पीछे लगाए जा सकते हैं। अफिद से अधिक गोबर खाद का उपयोग किया जाता है, बाकि बीमारी रोकक दवा एवं प्रोटीन टपक प्रणाली से पानी के साथ सीधे पीछे की जड़ों में पहुँचाया जाता है। जड़ों में हमेशा नमी बरकरार रखने के लिए एक विशेष सीट का उपयोग किया जाता है, जिससे घुप व अन्य बीमारियाँ से बचा कर इनकी जड़ों में नमी बनाई जा सके। साथ ही कि, इस फसल को कृषकों द्वारा अनार, अजीर व अन्य पौधों के नीचे भी लगाया गया है, इससे इनमें से किसी फसल को कोई नुकसान नहीं होता है।

कृषि | उमझर का युवा किसान बना मिशाल, अजीर, अनार, चीकू व करौंदा भी लगा दिए

दो एकड़ मिर्च की खेती से बढ़ी आमदनी

हरिभूमि न्यूज, नगर

जिले के एक छोटे से गांव के युवा ने खेती-किसानी कर दो एकड़ में मिर्च लगाकर स्वरोजगार स्थापित कर दिया है। अब यहां मिर्च के साथ ही अजीर, अनार, चीकू और करौंदा की खेती भी हो रही है। युवा किसान के साथ अब गांव के और लोग भी जुड़ रहे हैं, जिन्हें स्थानीय स्तर पर ही काम मिल जा रहा है।

विकासखण्ड बैकुंठपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत उमझर ग्राम में किसान फिरोज ने मिर्च की खेती कर खुद तो रोजगार पाया ही साथ में ग्राम के कई नवयुवकों को भी रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। सप्ताह में दो बार ये मिर्च तोड़ते हैं, जो एक बार में लगभग 100 किलो ग्राम होता है। बाजार में यह मिर्च 5 से 6 हजार रुपए का होता है। इस हिसाब से अब सिर्फ मिर्च की खेती से अच्छी खासी कमाई कर रहे हैं। इस वर्ष जहाँ एक ओर पूरा क्षेत्र सुखे की मार झेल रहा था, वहीं ये किसान कड़ी मेहनत कर पूरी गर्मी अपने फसल को सवारने में लगे रहे,



दो एकड़ में लगी मिर्च।



सिंचाई का साधन। इनसेट में फलदार पीछे।

इसका परिणाम आज इन्हें बेहतर उपज से मिल रहा है।

प्रशासन से भी मिला सहयोग

कोरिया कृषि विज्ञान संस्थान द्वारा इन्हें उन्नत किस्म की बीज टपक विधि से सिंचाई की तकनीकी व अन्य संसाधन उपलब्ध कराए, इससे इन्हें अपने कार्य में सहयोग तो मिला ही साथ में सरलता से अच्छी फसल भी प्राप्त होने लगी।

टपक विधि से होती है सिंचाई

बगिया में पूरी तरह से टपक विधि से सिंचाई होती है, इससे पानी का दुरुपयोग नहीं होता और पानी पीछे की जड़ तक गहराइयों में बढ़ी आसानी से पहुँच जाता है। इस कार्य में ज्यादा पानी का खपत नहीं होता साथ ही पीछे के जड़ों पर पानी सरलता से पहुँच जाता है।

➔ शेष पृष्ठ 14 पर

Innovations introduced in overall functioning of KVKs and execution of different programmes.

बकरी पालन एवं प्रबंधन: बबूल की फली प्रोटीन आहार का स्रोत, श्री ब्रिजेश कुमार, ग्राम-सलका, विकास खण्ड-बैकुण्ठपुर, जिला-कोरिया (छ.ग.), श्री ब्रिजेश ग्राम-सलका के एक भूमिहीन पशुपालक है जो अपनी जीविका के लिये सिर्फ बकरी पालन का कार्य करते है। जो कि अपने गावों के विभिन्न लोगों के द्वारा पाले जाने वाली गायों और बैलों को चराने हेतु प्रतिमाह कुछ पैसे लेकर यह कार्य करते है। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण अपनी बकरीयों सान्द्र आहार नहीं दे पाते



जिससे बकरीयों में सही ढंग से विकास एवं उत्पादन नहीं हो पा रहा था। वर्ष 2014 माह फरवरी में जब वे के.वी.के. कोरिया में पशुपालन हेतु एक प्रशिक्षण में आये तब से उन्हें दी गई जानकारी को उन्होंने इस अपने छोटे से व्यवसाय को आगे बढ़ाने हेतु कुछ नये प्रयोग प्रारंभ किये इन्होंने बकरीयों को पूरक आहार के रूप में **बबूल फली** एवं महुआ खली को आहार के साथ मिलाकर देना प्रारम्भ किया चूंकि वे बाजार में मिलने वाली दालों की चुनी व अन्य सान्द्र आहार नहीं कर सकते थे अतः इन्होंने बकरीयों को खुराक के तौर पर प्रतिदिन प्रति बकरी 50-80 ग्राम आहार के साथ देना प्रारम्भ किया और प्रतिमाह 1800-2000 रु. की बचत कर अपने बकरी पालन व्यवसाय को नये आयाम की ओर मोड़ दिया।

बकरी पालन में उपयोगिता एवं लाभ: बबूल फली तथा महुआ खली को आहार के रूप में देने से बचत के साथ-साथ पशुपालन में होने वाले आर्थिक व्यय को कम कर अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है, चूंकि बबूल फली तथा महुआ खली बहुत आसानी से बिना किसी व्यय के उपलब्ध हो जाती है एवं बबूल फली में लगभग 12% प्रोटीन 55% एनर्जी तथा महुआ खली में लगभग 30% प्रोटीन 48% एनर्जी पायी जाती है, एवं इसका उचित मात्रा में 15-30% उपयोग करने पर इसमें पाये जाने वाले विषैला पदार्थ टेनिन का बकरीयों के स्वास्थ्य में कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होता है।



मुर्गी उत्पादन एवं प्रबंधन: दीमक प्रोटीन पुरक आहार के रूप में, श्री बलराम मांझी, ग्राम-खाड़ा, विकास खण्ड-बैकुण्ठपुर, जिला-कोरिया (छ.ग.), श्री बलराम मांझी कोरिया जिले के ग्राम खाड़ा के एक प्रगतिशील कृषक हैं। जो खेती के साथ-साथ मुर्गीपालन परंपरागत तरीके से कर रहे थे। श्री मांझी मुर्गियों को दाना चुगने हेतु खुले में छोड़ देते थे, जिससे मुर्गियों को संतुलित आहार नहीं प्राप्त होता था। वर्ष 2013-14 से कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के संपर्क उपरांत श्री बलराम को आर.आई.आर.



वनराजा एवं ग्राम प्रिया मुर्गी प्रजाति प्रदान किया और मुर्गीपालन को अपना मुख्य व्यवसाय बनाया, तथा मुर्गियों को दैनिक आहार के रूप में दाने के अलावा दीमक को भी आहार के रूप में शामिल किया जो प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। मुर्गियों को प्रतिदिन 01 किलो दीमक दिये जाने पर कृषकों को लगभग 1.32 किग्रा. दाने की बचत होने के साथ प्रतिमाह रूपये 900 की बचत हुई।

कृषि में उपयोगिता एवं लाभ: दीमक को भी आहार के रूप में देने से दानों में बचत होने के साथ-साथ कृषक के आर्थिक स्थिति सृदृढ हुई। क्योंकि दीमक प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत होने की वजह से मुर्गीयों के स्वास्थ्य व उसके भार में पहले से ज्यादा बढ़ोत्तरी प्राप्त होने लगी। दीमक को आहार के रूप में देने से मुर्गीयों के स्वास्थ्य तथा भार में बढ़ोत्तरी के साथ साथ मांस की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। दीमक एक अच्छा विकल्प हो सकता है, व्यवसायिक मुर्गीयों के प्रोटीन आहार जैसे- फिश मिल को बदलने के लिए, क्योंकि दीमक के शरीर में पानी, प्रोटीन, लिपिड, खनिज लवण, कार्बोहाईड्रेड का अच्छा स्रोत है।



फसल प्रबंधन: टमाटर की उन्नत किस्म एवं नवोन्मेषी स्टेकिंग कर किसान मालामाल, श्री मुन्ना लाल, ग्राम—मनसुख, विकास खण्ड—बैकुण्ठपुर, जिला—कोरिया (छ.ग.), श्री मुन्ना लाल



कोरिया जिले के ग्राम मनसुख के एक प्रगतिशील युवा कृषक हैं। उन्होंने कृषि को जीवनयापन के रूप में चुना। श्री मुन्ना लाल प्रारंभ से ही पारंपरिक रूप से खेती करते रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के संपर्क में आते ही वैज्ञानिक ढंग से खेती की शुरुआत की। उन्होंने अपने 01 एकड़ प्रक्षेत्र में टमाटर की उन्नत किस्म अर्का

रक्षक व अर्का विकास की खेती में स्थानीय स्तर पर प्राप्त झाड़ियों को स्टेकिंग के रूप में उपयोग किया।

सहारा देने के लिए उन्होंने बांस अरहर ढेंचा व अन्य लकड़ियों को 15–20 से. मी. के अंतराल पर भूमि में गाड़ दिया. पौधों को सुतली की सहायता से इन गाड़े हुए लकड़ी के टुकड़ों से बाँध दिया। इस तकनीक से एक पेड़ में 13–14 किलो तक उत्पादन होने लगा वही पुरानी विधि से केवल 6–7 किलो फल प्राप्त होते थे. इस विधि से फल उत्तम व आकर्षक रंग प्राप्त करने लगे साथ ही साथ फलों का आकार भी बढ़ने लगा एवं फल सदन की समस्या काम हो गयी। परंपरागत तरीके से 60 क्विंटल/एकड़ उपज लेते थे, उन्नत किस्म व स्टेकिंग का उपयोग करने के बाद 150 क्विंटल/एकड़ की उपज प्राप्त किया। जो पूर्व की तुलना में शुद्ध आय बढ़कर राशि रूपये 53210/—प्राप्त की।



कृषि में उपयोगिता एवं लाभ: टमाटर की उन्नत किस्म एवं स्टेकिंग तकनीक का उपयोग कर उपज में 35 से 40 प्रतिशत वृद्धि हुई, साथ ही टमाटर की गुणवत्ता जैसे रंग लाल, सामान आकार, आकार में वृद्धि एवं परिपक्वता के साथ प्राप्त हुए। पूर्व में जो टमाटर जमीन के संपर्क

आने से सड़/गल जाते थे स्टेकिंग करने से उपरोक्त समस्या का निदान हुआ, जिससे बाजार मूल्य अधिक प्राप्त हुआ।

जल प्रबंधन: सुखे गोबरी नाला के रेत से पानी निकाल के करते है खेती, श्री रामसजीवन



साहू, ग्राम-आंजोखुर्द, विकास खण्ड-बैकुण्ठपुर, जिला-कोरिया (छ.ग.), श्री रामसजीवन साहु एक प्रगतिशील कृषक हैं। जिनके पास मात्र 5 एकड़ कृषि भूमि है, जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पिछले कई सालों से रबी फसलो की खेती करते आ रहे थे। परन्तु पानी एवं अच्छे बीज के अभाव में वह ठीक ढंग से खेती नहीं कर पा रहे

थे। वे कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के सम्पर्क में आकर मोटर पंप को उस गड्ढे में और कितनी शक्ति का मोटर लगाया जाये उसके बारे में जानकारी ली साथ ही विभिन्न प्रकार के उन्नत बीज एवं वैज्ञानिक तकनीक से प्रदर्शन लगाया और प्रति एकड़ दुगुना लाभ अर्जित कर रहे हैं।

कृषि में उपयोगिता एवं लाभ: एक समय था जब क्षेत्र के किसान सिर्फ बरसात में एक ही फसल लेते थे। आज वे दो फसल लेने लगे हैं। सूखा गोबरी नाला क्षेत्र के लोगों के लिये जीवनदायिनी बन गया है। और उससे वे पर्याप्त मात्रा में पानी ले रहे हैं। इस तकनीक के सहारे उसने गेहूँ, सरसों सहित अन्य प्रकार की फसलों की सिंचाई की। इसे देख कर गांव के अन्य किसान भी सूखे नाले से पानी लेकर फसल ले रहे हैं।



बांस की कोठी में अनाज भण्डारण: श्री करन सिंह, ग्राम-बरबसपुर, विकासखण्ड-मनेन्द्रगढ़, जिला-कोरिया (छ.ग.), श्री करन सिंह एक प्रगतिशील कृषक है। जिनके पास मात्र 05 एकड़ कृषि भूमि है। जिसमें खरीफ वर्ष में धान की फसल एवं रबी वर्ष

में गेहूँ के साथ –साथ अलसी, सरसों की फसल की ली जाती है, और सिंचाई की साधन



नहर से की जाती है, धान की फसल कटाई एवं मिजाई के पश्चात् भण्डारण हेतु बांस की 5–6 कोठी में किया जाता है। एक कोठी की क्षमता 4 से 5 क्विंटल होती है। इस प्रकार 6 कोठी में 24 से 30 क्विंटल धान एकत्र किया जा सकता है। जिससे धान को अधिक समय तक भण्डारित किया जा सकता है, और भण्डारित धान में

कीट-पतंगों से होने वाले नुकसान को कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के पश्चात् भण्डारित बांस की कोठी में उपचारित हेतु घरेलु उपाय नीम की पत्ती, सीताफल की पत्ती एवं लेन्टाना कैमरा के पत्ती को रखने की सलाह दिया। जिससे भण्डारित किये गये धान एवं अन्य फसलों को कीट बिमारी से बचाया जा सके।

कृषि में उपयोगिता एवं लाभ: बांस की कोठी में बीज रखने से नमी का प्रतिशत 7 से 8 होता है, और बीज की अंकुरण क्षमता बहुत समय तक बनी रहती है, और कीट बिमारी से रोग मुक्त होता है। साथ ही साथ बांस की कोठी में धान को ज्यादा समय तक भण्डारित कर आगामी वर्ष में बीज का पुनः उपयोग में लाया जा सकता है।



हल के पीछे कुण्ड में मटर की बोआई: श्री राम सिंह, ग्राम–साल्ही, विकासखण्ड–मनेन्द्रगढ़, जिला–कोरिया (छ.ग.), श्री राम सिंह एक प्रगतिशील कृषक है। जिनके पास मात्र 03 एकड़ कृषि भूमि है। जिसमें खरीफ वर्ष में धान की फसल एवं रबी वर्ष में गेहूँ, चना, अलसी, सरसों, मटर, टमाटर, आलू, मिर्च, धनिया एवं साग की फसल ली जाती है, और उनके पास सिंचाई की साधन ट्यूबवेल है, रबी वर्ष में मटर की बुआई किया जाता है और बुआई हल के पीछे कुण्ड में किया जाता है, जिससे बीज बराबर मात्रा में गिरते हैं उगने

पर एक कतार में दिखाई देती हैं, और कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने से बोआई के पहले बीज थायरम, बावस्टिन कार्बेन्डाजाईम इत्यादि फफूंद नाशक दवाई से उपचारित करके बुवाई करने से मटर फसलों पर लगने वाले कीट रोग के प्रकोप से बचाया जा सकता है।



कृषि में उपयोगिता एवं लाभ: हल के पीछे कुण्ड में बुआई करने से बीज की मात्रा कम लगती है



और बीज बराबर मात्रा में गिरता है। जिससे उत्पादन में अधिक वृद्धि होती है, और बीज ज्यादा गहरे में नहीं गिरता क्योंकि हल के पीछे प्लास्टिक का कुण्ड लगा होता है, और साथ ही साथ स्वस्थ बीज प्राप्त होता है। जिससे उत्पादन का कीमत भी अच्छा मिलता है, और 2 एकड़ में लगभग बीज का उत्पादन 10 से 12 क्विंटल लिया गया।

बैल चालित हल के पीछे कुड में बुवाई: कृषक का नाम :- गोरेलाल राजवाडे/श्री आमिर साय राजवाडे ग्राम :- ओडगी विकासखंड:- बैकुण्ठपुर जिला :- कोरिया, कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया से लगभग 10 किमी. दूरी पर झुमका बांध के किनारे ओडगी ग्राम है। जहाँ लगभग औसतन सीमांत कृषक रहते हैं। वहाँ के कृषक पारंपरिक विधि से खेती करते थे। कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के वैज्ञानिकों के प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान देखा गया कि सिंचाई के साधन की पर्याप्तता के बावजूद कृषक पारंपरिक विधि से ही खेती कर रहे थे। तथा भूमि के काफी ऊंच नीचे होने के कारण ट्रेक्टर जाने में परेशानी होती थी।

केवीके के माध्यम से केन्द्र के वैज्ञानिकों से कृषक गोरे लाल का संपर्क आने पर 01 हे. में गेहूँ की उन्नत किस्मों को लगाया गया। चूंकि उस ग्राम में सीड ड्रिल नहीं होने के कारण वहाँ के कृषक छिटकाव विधि से बुवाई करते थे। फिर कृषि विज्ञान केन्द्र कोरिया के वैज्ञानिकों द्वारा बैल चालित हल के पीछे कुड बनवाकर बीजों को निश्चित दूरी पर गिराकर बोवाई करायी जाने लगा साथ ही बीज उपचार एवं खरपतवार प्रबंधन में भी किया जाने लगा। जिससे उनका उपज परंपरागत विधि से बढ़कर वैज्ञानिक विधि द्वारा 5 –6 क्विंटल बढ़ गया। और उनके आय में 5–6 हजार प्रति हेक्टेयर वृद्धि हुआ। उसके पश्चात ग्राम के किसान सभी फसलों को कतार में बोन के साथ साथ खरपतवार

प्रबंधन व कीट बीमारियों के प्रकोप से बचाव करने लगे। साथ ही खेती के अलावा मुर्गीपालन व मत्स्य पालन की ओर अग्रसर होने लगे जिससे उनके आजीविका एवं आर्थिक स्थिति मजबूत हो गयी।

